allotted two and a half hours for the consideration of the motion in respect of the Fifth Annual Report of the Hindustan Antibiotics Limited, Pim-pri.

REFERENCE TO ANNOUNCEMENT *RE* THE APPROPRIATION (VOTE ON ACCOUNT) BILL, 1960

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): One point, Sir, in that connection; I abide by your ruling already given. You said, Sir, that we should sit on Friday after 5 P.M. but then the other House will pass that Bill on Friday.

MR. CHAIRMAN: No; I am sorry you are misinformed. The Bill will be passed there on Thursday, Thursday evening it may be. It will come to us on Friday.

SHRI BHUPESH GUPTA: In that case how shall we have two "flays' notice, Sir?

MR. CHAIRMAN: That is all right.

SHRI BHUPESH GUPTA: One day more we can sit, Sir. What is the wrong?

MR. CHAIRMAN: Everything is wrong. Let us have a little conscience about public funds.

SHRI BHUPESH GUPTA; I thank you very much, Sir; I am prepared to forgo my salary and allowances for the three days.

THE APPROPRIATION (RAIL-WAYS) BILL, T960—continued

श्री टी० पांडे (उत्तर प्रदेश) : सभापति महोदय, कल मैंने यह जिक्र किया था कि हिमालय के समीप उत्तर प्रदेश, बिहार और आसाम राज्य के कुछ अंचल ऐसे हैं जिनमें छोटी लाइन का जाल बिछा हुआ है। मैंने यह भी जिक्र किया था कि रेलवे मंत्रालय और रेलवे बोर्ड इस पावन प्रदेश से परिचित होगा। यह प्रदेश भारत में ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही प्रसिद्ध रहा है। मैं दो एक शब्द इसके बारे में कहना चाहता हूं। शाक्यों की बहुत पुरानी गणतंत्र-प्रणाली इस प्रदेश में थी, यहां मल्ल और लिच्छवियों का गणतंत्र था, जिसको आधार बना करके बुद्धिज्म का इतना विस्तार समूचे देश में हुआ और उसी आधार पर हमारे देश का प्रजातंत्र का संविधान भी बना हुआ है। यह हिस्सा जो है उसका प्राचीन समय में हिमालय प्रहरी था, यह अजेय दुर्ग था और यह स्थान सुरक्षित समझा जाता था। यह छोटी लाइनों से घिरा हुआ है और सामरिक दृष्टि से, रक्षा की दृष्टि से इस अंचल का बहुत ही महत्व हो गया है। छोटी लाइन जो है वह पुरातन समय में कम्पनी के संचालन में थी और कम्पनी का शासन कुछ न कुछ सामन्तवादी प्रवृत्ति का था, नवाबी ढंग का था, उसमें परिवर्तन हुआ है लेकिन एक बात जरूर है कि कम्पनी के समय में लोगों को किराया कम देना पड़ता था और यदाकदा उसकी ऐसी परम्परायें थीं कि वंश-परम्परागत लोग उसमें मुलाजिमत भी करते थे। ये दोनों बातें समाप्त हो गईं। आज हमें किराया अधिक देना पड़ता है। और हिस्सों में इंडियन रेलवे में जिस प्रकार का किराया है उसी प्रकार का किराया इस छोटी लाइन में भी है। सुविधा कम है, आराम कम है और किराया बराबर है, यह बात कुछ बहुत खलती है। यद्यपि, मेरा यह विश्वास है कि पूर्वोत्तर रेलवे का जो प्रबन्ध है और विशेषत: उसके जो जनरल मैनेजर हैं उनके विचार बड़े ही प्रगतिशील हैं और प्रबन्ध के दृष्टिकोण से वे बड़े ही जागरूक हैं और गतिशील भी हैं और मेरा यही विचार पांडू रीजन के सम्बन्ध में भी है लेकिन जनरल मैनेजर और उनके मातहत कर्मचारियों की शक्ति और उन सब के साधन सीमित हैं। रेलवे बोर्ड और रेलवे मंत्रालय को इस तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ेगी जिससे कि वहां की जनता